शिक्षक का व्यापक नज़रिया कक्षा को जीवन्त और सार्थक बनाता है

शिक्षिका सुमन विष्ट से दीपक राय की बातचीत

दीपक : सुमनजी, अपनी पढ़ाई-लिखाई और शिक्षकीय जीवन के बारे में कुछ बताएँ।

सुमन : मेरे माता-पिता उत्तराखंड के निवासी हैं, लेकिन अपनी नौकरी के चलते वे जयपुर में आकर बस गए थे। जयपुर के महारानी स्कूल से मेरी स्कूली शिक्षा हुई, महारानी कॉलेज से स्नातक और राजस्थान यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर व शोध हुआ।

मैं 31 वर्षों से शिक्षण कर रही हूँ। इस दौरान सात स्कूलों में शिक्षण कार्य का मौक़ा मिला। शुरुआती वर्षों में मैंने अपने वरिष्ठ और साथी अध्यापकों से बहुत कुछ सीखा। प्रारम्भिक शिक्षा की शिक्षण विधियों को समझा और उन्हें व्यवहारिक रूप में उतारने का प्रयास किया। अपने प्रधानाध्यापकों से मैंने सीखा कि एक व्यवस्थित स्कूल क्या होता है और बच्चों के साथ किस प्रकार से काम करना है। मैं जहाँ भी गई, काम करने का उचित माहौल मिला। मैंने भी सभी स्कूलों में कुछ-न-कुछ नया करने का प्रयास अपनी तरफ़ से किया।

दीपक : क्या आप प्रारम्भ से ही शिक्षक बनना चाहती थीं? आपके शोध करने के पीछे भी क्या शिक्षक बनना ही उद्देश्य था या कुछ और?

सुमन : मुझे बचपन से ही पढ़ने-लिखने का बहुत शौक़ था। अपने स्कूली दिनों में ही मैं अपने कुछ शिक्षकों से इतना प्रभावित थी कि मैंने निर्णय ले लिया था कि आगे जाकर शिक्षक ही बनूँगी। पीएचडी की प्रेरणा मुझे अपनी माताजी से मिली। हाँ, शोध करते समय तो यह मन में था कि महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में पढ़ाना होगा लेकिन मैंने पूरे मन से धीरे-धीरे

स्कूल में ही पढ़ाने का काम स्वीकार किया। कुछ ही समय बाद मुझे लगने लगा कि मेरे सपनों की दुनिया यही थी। यानी, छोटे बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में संलग्न होना। आज मुझे यह लगता है कि शिक्षकों को ख़ूब पढ़-लिखकर और पूरी तैयारी के साथ पढ़ाने के काम में आना चाहिए। एक शिक्षक का नज़रिया जितना व्यापक होगा, उसकी कक्षा उतनी ही जीवन्त और बच्चों की दुनिया से तालमेल बैठा सकने में समर्थ होगी।

पढ़ाना निश्चित रूप से एक पेशा है, लेकिन यह मेरे लिए पेशे के साथ 'पैशन' भी है, और प्रतिबद्धता भी। यह मेरे जीवन का सबसे पसन्दीदा काम है। मुझे छुट्टियों के दिन भी स्कूल आना अच्छा लगता है। बच्चे कुछ किताबें पढ़ लेते हैं, कुछ बागवानी कर लेते हैं, कुछ वॉल पेंटिंग, हैंडीक्राफ़्ट, साफ़-सफ़ाई और फिर घर वापस। यह सब एक सकारात्मक ऊर्जा और सोच के साथ होता है। मुझे पेड़-पौधों के साथ कुछ-कुछ प्रयोग करते रहने का शौक़ है। वृक्षारोपण, पर्यावरण की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है ही, पेड़-पौधे विद्यालय की सुन्दरता में भी चार चाँद लगाते हैं। इसके साथ-साथ अगर पाठ्यक्रम के उपयोग की बात करें तो बच्चे सहज रूप से ही समझ जाते हैं कि कौन-सा पौधा किस मौसम में उगाया जाना चाहिए, कौन-सा पौधा बीज से उगता है, कलम से पौधे किस प्रकार लगाए जाते हैं, कौन-से पौधे जानवरों के भोजन के काम आते हैं, कौन-से औषधीय पौधे हैं, आदि। बच्चे पौधों की लम्बाई, चौड़ाई व उनके अंगों की जानकारी के साथ यह भी सीखते हैं कि किस मौसम में किस पौधे में फूल आते हैं, फलों वाले पौधे कौन-से हैं, किन फ़सलों से अन्न प्राप्त करते हैं, आदि। यानी, कई सारी बातों पर हम पौधों पर काम करने के क्रम में ही एक समझ बनाने की कोशिश करते हैं। बच्चे भी मेरे साथ पुराने पौधों से काफ़ी नए पौधे उगाते हैं और विद्यालय में आने वाले अतिथियों को हम सब अपने हाथों से तैयार पौधे ही उपहार में देते हैं। कई सारे स्कूलों को भी हमने अपने बच्चों द्वारा लगाए पौधे भेंट किए।

दीपक : विद्यालय में बच्चों की सक्रियता बढ़ाने के लिए आप क्या करती हैं?

सुमन : विद्यालय में बच्चों की सक्रियता बढ़ाने के लिए पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त

अन्य सह शैक्षिक गतिविधियों, जैसे– खेलकूद, ड्राइंग, नृत्य के साथ-साथ आर्ट एंड क्राफ़्ट, आदि की शिक्षा भी दी जाती है। समय-समय पर अन्य संस्थाओं के माध्यम से हमारे विद्यालय में बच्चों के लिए साल में दो-तीन कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं जिनमें बच्चों को ड्राइंग-पेंटिंग के अतिरिक्त मास्क मेकिंग, नुक्कड़ नाटक और कई खेल गतिविधियाँ कराई जाती हैं। बच्चे विद्यालय को अपने घर से भी अधिक अपना समझते हैं। इसलिए वे हर चीज़ में रुचि रखते हैं, उसे सँवारते हैं और विद्यालय की हर गतिविधि में शामिल रहते हैं। विद्यालय की समग्र उन्नति को लेकर प्रत्येक बच्चा जागरूक है। दीवारों के रंग कौन-से होंगे, कहाँ कौन-सा चित्र बनेगा, पेड़-पौधे कहाँ और कौन-से लगेंगे, टायलेट की सफ़ाई से लेकर विद्यालय प्रांगण और कक्षा की साफ़-सफ़ाई तक वे अपनी ज़िम्मेदारी समझते हैं और पूरी तत्परता से निभाते भी हैं। दीवारों के रंग-रोगन से लेकर सफ़ाई तक का सारा काम बच्चे ख़ुद ही करते हैं। यूँ समझिए कि एक तरह से वे ही विद्यालय संचालित करते हैं। दरअसल, मैं बच्चों को ज़िम्मेदारी देती हूँ और वे उसे पूरे दायित्व से करते भी हैं। कई बार वे बहुत अच्छे-से उन ज़िम्मेदारियों को नहीं निभा पाते, लेकिन इससे उन्हें ज़िम्मेदारियाँ देने का काम नहीं रुकता।

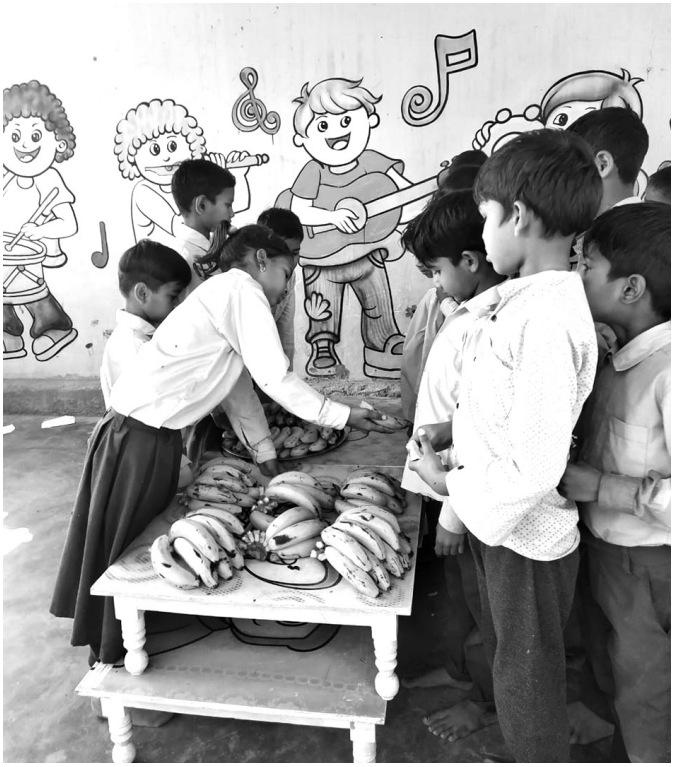

दीपक : बच्चों की इस तरह से विद्यालय में भागीदारी देख-सुनकर अच्छा लग रहा है। आपने कोविड काल के दौरान बच्चों के लिए कई छोटे-छोटे वीडियो और शैक्षिक गतिविधियों का निर्माण किया है, उनके बारे में विस्तार से बताएँ।

सुमन : कोरोना काल में बच्चों की पढ़ाई का काफ़ी नुक़सान हुआ था। उन्हें शिक्षा से जोड़े रखना एक अहम मुद्दा था। ऐसे समय में मोबाइल के माध्यम से ही हम बच्चों तक अपनी बात पहुँचा सकते थे। उस समय में उपलब्ध संसाधनों की मदद से हमने कई सारे वीडियो बनाए, जिन्हें बच्चों के साथ साझा करके उनसे बातचीत करती थी। कोविड काल के बाद भी बच्चों के लर्निंग लॉस को दूर करने के लिए मैं निरन्तर छोटे-छोटे शैक्षिक वीडियो और गेम बना रही हूँ, जिनमें संख्या ज्ञान, मौखिक भाषा विकास एवं कविता-कहानियों पर काम किया गया है ताकि बच्चे अपनी कक्षा स्तर की लर्निंग को हासिल कर पाएँ। अभी हाल ही में हमने विद्यालय में पोषाहार में मिलने वाले केलों की दुकान लगाकर जोड़-बाक़ी की अवधारणा का एक वीडियो बनाया था, वह भी काफ़ी पसन्द किया गया। हमारी देखा-देखी यह प्रयोग अन्य विद्यालय भी कर रहे हैं।

विद्यालय में नित नए प्रयोग होते रहते हैं। यह शुरुआत हमने 6-7 साल पहले थर्माकोल के वेस्ट मटेरियल, एक टूटे हुए बैडमिंटन रैकेट और पीओपी की सहायता से एक कम्प्यूटर बनाकर की थी। इसमें हमने घर में वेस्ट पड़ा हुआ माउस और की-बोर्ड भी काम में लिया और स्क्रीन की जगह काली शीट का प्रयोग किया था। वह मॉडल हू-ब-हू असली कम्प्यूटर जैसा ही दिखाई देता था। बच्चे इसकी सहायता से कम्प्यूटर के प्रमुख भागों को आसानी से समझ पाए। अँग्रेज़ी के एक पाठ में कम्प्यूटर के बारे में बताया गया था। बच्चे इस मॉडल की सहायता से उस पाठ को आसानी से समझ सके। इसी प्रकार अभी कुछ दिन पहले ही विद्यालय में खिले हुए गुलमोहर और छोटे-छोटे पिंकी के फूलों की सहायता से बच्चों ने बेहद सुन्दर पेंटिंग बनाई।

बेकार चीज़ों को नया रूप देते समय उद्देश्य कलात्मक रहता है, परन्तु जैसे ही कोई वस्तु आकार लेती है तो उसमें स्वत: ही विद्यालय के पाठ्यक्रम अनुसार सम्भावनाएँ नज़र आने लगती हैं कि सामग्री का किस प्रकार से उपयोग हो। साथ ही इस तरीक़े के कार्यों से विद्यार्थियों में सृजनशीलता का विकास होता है।

दीपक : आपके स्कूल में पर्यावरण के हित में जो कार्य किए जा रहे हैं, उनके बारे में कुछ बताइए।

सुमन : पहले यहाँ सिर्फ़ एक बबूल का पेड़ था और बिजली भी नहीं थी। इस कारण गर्मियों के दिनों में बच्चों को काफ़ी परेशानी होती थी। इसी परेशानी को देखते हुए हमने वृक्षारोपण शुरू किया। समाजसेवी संस्थाओं की मदद से विद्यालय की चारदीवारी को ऊँचा करके हमने शहतूत, अशोक, गुलमोहर, नीम, जामुन, मीठा नीम, चम्पा, आदि के पेड़ लगाए। इनके अलावा आज लगभग 50 गमलों में कई तरह के पेड़-पौधे विद्यालय परिसर में हरियाली बिखेर रहे हैं। इसमें विद्यार्थियों का विशेष योगदान है जो बारी-बारी से सुबह-सवेरे इन गमलों और पेड़ों में बड़ी ही तन्मयता और रुचि के साथ पानी देते हैं। यहाँ तक कि छुट्टी के दिनों में भी वे नियमित रूप से विद्यालय के रख-रखाव पर ध्यान देते रहते हैं।

दीपक : विद्यालय के पुस्तकालय के बारे में भी कुछ बताएँ।

सुमन : शुरुआत में विद्यालय की लाइब्रेरी में कुछ ही पुस्तकें थीं। सामाजिक संस्थाओं और सरकारी सहायता से प्राप्त पुस्तकें मिलाकर आज

हमारी लाइब्रेरी में लगभग 1000 पुस्तकें हैं। विद्यालय में अतिरिक्त कमरा न होने के कारण हम पुस्तकों को प्रत्येक कक्षा के अन्दर साप्ताहिक रूप से एक मेज़ पर जमाकर रख देते हैं। बच्चे अपनी-अपनी पसन्द की किताबें उनमें से पढ़ते हैं। बच्चे लैंडिंग कार्ड के माध्यम से अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों को उसमें भरते हैं। 'नो बैग डे' के दिन भी विद्यार्थियों के लिए किसी एक किताब पर बुक टॉक और रीड अलाउड जैसी गतिविधियाँ कराई जाती हैं और बच्चों से संवाद कर किताब पर समझ विकसित की जाती है। आज बच्चे ढेर सारी किताबों पर अपनी स्वतंत्र राय व्यक्त कर पाते हैं। हालाँकि इसमें चुनौतियाँ भी कम नहीं थीं। प्रारम्भ में हमने अपने घर में उपलब्ध कहानी की किताबों से लाइब्रेरी की शुरुआत की, उसके पश्चात कुछ विद्यार्थियों ने पुस्तकों में इज़ाफ़ा किया। बाद में रोटरी क्लब के सहयोग से हमें 300 किताबें मिलीं, कुछ सरकारी सहयोग से प्राप्त हुईं और कुछ मित्रों व परिचितों ने भेंट कीं। लाइब्रेरी को बच्चे स्वयं ही संचालित करते हैं, क्योंकि उनमें किताबें पढ़ने की रुचि जागृत हो गई है।

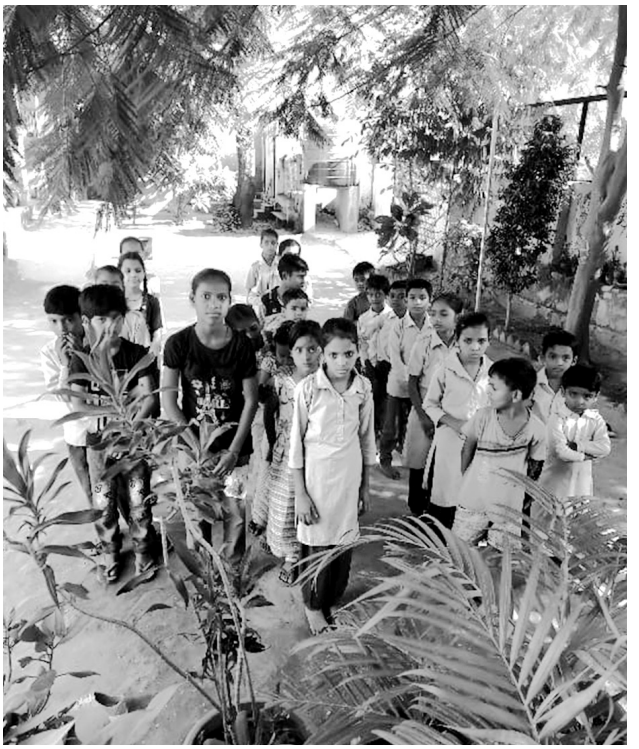

दीपक : आसपास का समुदाय विद्यालय विकास में किस प्रकार का सहयोग प्रदान करता है? विद्यालय के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा रहता है?

सुमन : हर विद्यालय में एसएमसी या एसडीएमसी बनाई जाती है। इसके मार्फ़त विद्यालय में समुदाय के द्वारा विद्यालय विकास की योजना निर्माण व प्रस्तावों पर सहयोग और सम्भावनाओं की तलाश की जाती है। हमारे विद्यालय में भी छात्र संख्या के अनुसार पिछले 5 साल से अध्यापकों की कमी है। समुदाय के आसपास के लोग यद्यपि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं हैं, परन्तु यदा-कदा अपना सहयोग स्कूल के कार्यक्रमों में व्यवस्था और अध्यापन के लिए देते रहते हैं। समय-समय पर उनके साथ रूबरू बातचीत और बच्चों के माध्यम से संवाद भी होता रहता है। विद्यालय की समस्त गतिविधियों की जानकारी पूरी पारदर्शिता के साथ उन्हें दी जाती है। बच्चों के अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क रखा जाता है और विद्यालय के कामों में उनसे सहयोग लिया जाता है। विभिन्न बच्चों के माता-पिता क्या-क्या काम करते हैं, इसकी भी एक सूची बनाई गई है। इनमें कोई राजमिस्त्री हैं, कोई प्लम्बर, कोई लकड़ी का काम करते हैं, तो कोई बिजली का। यदि कोई कहीं पढ़ा रहे हैं तो ज़रूरत मुताबिक़ वे भी हमसे और हम भी उनसे सम्पर्क करते हैं। विद्यालय के कामों में वे कई बार सहयोग करते हैं। कई बार न्यूनतम मेहनताने पर, तो कई बार मुफ़्त में भी। बच्चों की तरह उनके अभिभावक भी विद्यालय के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी समझते हैं। वे शिक्षा के महत्त्व

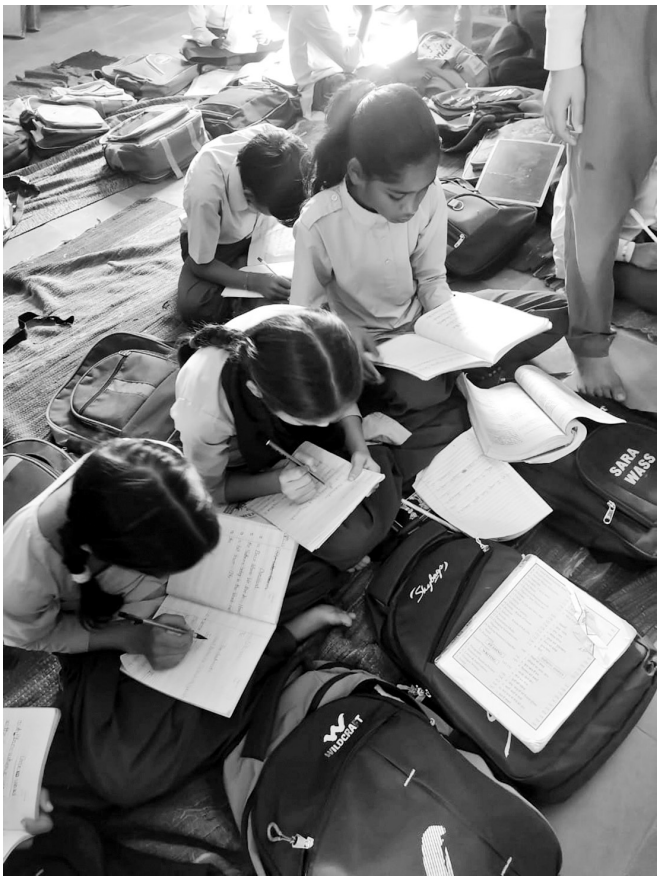

और समुदाय में इसके प्रसार को लेकर सजग हैं। विद्यालय में, विद्यालय के प्रबन्धन, संचालन, यहाँ दी जा रही शिक्षा और चल रही तमाम गतिविधियों में उनका यक़ीन है। उन्हें लगता है कि उनके बच्चे सही जगह और सही हाथों में हैं।

दीपक : आपका विद्यालय भौतिक दृष्टि से काफ़ी सम्पन्न दिखाई देता है। आपने यह सब सामग्री किस प्रकार से जुटाई?

सुमन : हमारा विद्यालय भौतिक संसाधनों की दृष्टि से काफ़ी पिछड़ा हुआ था। ऐसे में आसपास के निजी विद्यालयों से हमारी प्रतिस्पर्धा और भी बढ़ गई थी। मूलभूत सुविधाओं के अभाव में विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश से भी कतराते थे। रोटरी क्लब 'गुरुकुल' द्वारा हमारे विद्यालय में बाउंड्री वॉल को ऊँचा करवाकर बालक-बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय निर्माण व फ़र्नीचर उपलब्ध करवाया गया। विद्यालय में सुन्दर रंगीन चित्रकारी करवाकर विद्यालय को टेक्नोलॉजी से जोड़ने के लिए स्मार्ट टीवी और कम्प्यूटर दिया और विद्यालय की लाइब्रेरी के लिए उन्होंने कुछ पुस्तकें भेंट कीं। इसके बाद अनेक संस्थाओं द्वारा सहयोग दिया गया और विद्यालय में आज पर्याप्त मात्रा में फ़र्नीचर, दो स्मार्ट टीवी, इंटरनेट, पानी की टंकी जैसी मूलभूत सुविधाएँ जन सहयोग से मिलने लगी हैं। आसपास के दानदाताओं से सम्पर्क साधकर विद्यालय में बिजली, पानी, शौचालय के अतिरिक्त खेल सामग्री, मंच और स्मार्ट कक्षाओं का निर्माण कराया गया। हालाँकि, यह कभी भी बहुत आसान नहीं था। आरम्भ में प्राथमिक स्कूल होने के नाते कोई भी व्यक्ति या संस्था विद्यालय के विकास में सहयोग देने के लिए तैयार नहीं होती थी। लगातार सम्पर्क, कई दौर की बातचीत और निराशा के कई दौर के बाद धीरे-धीरे जब लोगों को लगने लगा कि उनका धन और श्रम सही जगह पर लगेगा तो अब स्वतः ही वे इस दिशा में अपने क़दम आगे बढ़ा रहे हैं।

दीपक : आपके लम्बे सेवाकाल में बच्चों के कई बैच आए-गए होंगे। कोई याद रह जाने वाली घटना?

सुमन : जब मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय नंदगाँव में कार्यरत थी, उस दौरान विद्यालय में एक छोटा बच्चा था। उसे सब लोग गूँगा कहते थे। उसके घरवाले भी यह मानते थे कि वो बोलता नहीं है। मैं लगातार उससे संवाद करती

रहती थी। एक दिन मैंने देखा कि वह बच्चों से कुछ बोल रहा है। असल में वह बच्चा गूँगा नहीं था, लेकिन न जाने क्यों बचपन से ही वह किसी से भी संवाद नहीं कर रहा था। स्कूल के माहौल को अपने अनुकूल पाकर और बच्चों के सम्पर्क के बाद उसकी झिझक खुलने लगी और वह बोलने लगा था। यह यक़ीनन एक शिक्षक और व्यक्ति के रूप में मेरे लिए बेहतर होने का एक अवसर था और काम करने में यक़ीन के पुख़्ता होने का एक पड़ाव भी।

दीपक : शुरू में बच्चों के प्रति आपका व्यवहार कैसा था? अब अपने व्यवहार में कुछ बदलाव पाती हैं? बच्चों का आपके प्रति व्यवहार कैसा रहा है?

सुमन : प्रारम्भ में मेरा व्यवहार थोड़ा कठोर रहता था। प्रयास रहता था कि उन्हें किसी प्रकार से मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा सिखा पाऊँ। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता रहा, मैंने पाया कि मुझे बच्चों के प्रति अपनापन और शान्त व्यवहार रखना पड़ेगा जिससे वे मेरे साथ सहज महसूस कर पाएँ। समय के साथ मैंने अपने व्यवहार में बहुत परिवर्तन किया और सिखाने की प्रक्रिया को भी थोड़ा सरल और सहज किया। इस दौरान बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता का भी मेरे प्रति बहुत विश्वास रहा। यही कारण रहा कि मैंने जिन-जिन स्कूलों में काम किया, वहाँ पर निरन्तर छात्र संख्या बढ़ी। जब बच्चे मेरी किसी भी बात का पालन उत्साह से करते हैं, मुझे लगता है कि बच्चों का मेरे किसी काम के प्रति विश्वास है।

एक बार नंदगाँव की एक अभिभावक मेरे पास अपने तीन बच्चों को लेकर आईं। उससे पहले उनके बड़े लड़के ने पढ़ाई नहीं की थी। वह मुझे बोलीं कि मुझे इन तीनों बच्चों को पढ़ाना है। मैंने भी बच्चों के साथ बहुत मेहनत की और बच्चों के माता-पिता ने भी विद्यालय में अच्छा सहयोग दिया। एक खेतिहर मज़दूर होने के बावजूद, वे 15 अगस्त व 26 जनवरी के उत्सव में बच्चों को अच्छा-ख़ासा इनाम देते थे। उनकी इच्छा थी कि उनके बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करें। उन्हीं का एक बच्चा आज कृषि वैज्ञानिक है और दोनों बिटियाँ एमए कर चुकी हैं। यह हमारे लिए ख़ुशी की बात है कि इतने प्राइवेट स्कूल होने के बावजूद उन्होंने सरकारी स्कूल से ही अपने बच्चों को पाँचवीं तक शिक्षा दिलवाई। हाल ही में मुझे पता चला कि उनके बड़े लड़के, जो पढ़ा-लिखा नहीं है, ने भी अपने बच्चों को उच्च शिक्षा ग्रहण करवा दी है। एक शिक्षक के तौर पर, पढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक जन-जागृति लाना भी एक महत्त्वपूर्ण काम है।

दीपक : प्राथमिक स्कूल के अध्यापक को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? आपकी चुनौतियाँ क्या रहीं? प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक का व्यवहार किस प्रकार का होना चाहिए?

सुमन : छोटे बच्चों को किस प्रकार से समझाया जाए, शुरू में यह कार्य बेहद कठिन प्रतीत हो रहा था। भाषा, सम्प्रेषण की एक मज़बूत कड़ी होती है। प्रारम्भ में स्थानीय भाषा के शब्दों की समझ न होने के कारण बच्चों से आत्मीयता के साथ तालमेल बैठाना थोड़ा कठिन कार्य होता था। धीरे-धीरे मैंने स्थानीय भाषा की समझ विकसित करने के साथ ही छोटे बच्चों के साथ काम करने के लिए क्रियात्मक विधि का उपयोग करना व खेल विधि से बच्चों को समझाना जैसी चीज़ें सीखीं और पाया कि बच्चे इन विधियों द्वारा आसानी से सीख पा रहे हैं।

गाँव के विद्यालयों में स्थानान्तरण हुए तो वहाँ आवागमन से लेकर आधारभूत सुविधाओं तक की समस्या से जूझना पड़ता था। अभिभावकों की स्कूलों के प्रति अरुचि भी एक बड़ी समस्या रही। वे शिक्षा और स्कूलों से अपने को जोड़कर नहीं देख पाते थे तो उनसे मिलना, उन्हें स्कूल में बच्चों को दाख़िले के लिए राज़ी करना एक विकट समस्या थी, लेकिन यह भी धीरे-धीरे हुआ।

प्राथमिक स्तर पर जो विद्यार्थी स्कूल आते हैं, उन्हें हम कच्चे घड़े की तरह मानते हैं। हालाँकि, वे अपने साथ अपने परिवेश से हासिल अनुभवों का एक समृद्ध संसार लेकर आते हैं। उन अनुभवों को स्कूली शिक्षा और परिवेश से जोड़ना, उनकी नींव मज़बूत करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। बच्चों को उपलब्ध संसाधनों के आधार पर शिक्षित करना भी एक चुनौती है। हम पाते हैं कि कभी-कभार बच्चों के पास कॉपी-पेंसिल जैसी ज़रूरी चीज़ें भी उपलब्ध नहीं होती हैं, ऐसे में बच्चों को यह सब उपलब्ध कराना, शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों और आसपास के वातावरण के प्रति संवेदनशील बनाना प्रमुख कार्य होता है। प्राथमिक स्कूल के अध्यापक में पर्याप्त धैर्य और संवेदनशीलता का होना बहुत आवश्यक है। एक पाँच साल का बच्चा जब हमारे पास पहली बार स्कूल में आता है तो वह हममें एक शिक्षक नहीं, अभिभावक खोजता है। बच्चों के साथ प्रेम और अपनत्व का व्यवहार उन्हें विद्यालय की तरफ़ आकर्षित करता है। साथ ही अभिभावकों को भी यह लगना चाहिए कि उन्होंने अपना बच्चा सुरक्षित हाथों में सौंपा है। समाज, अध्यापक और स्कूल का बेहतर आपसी तालमेल ही बच्चों के सीखने को समृद्ध कर सकता है। इसके साथ ही हमारा मृदु और ज़िम्मेदाराना व्यवहार ही बच्चों को विद्यालय में रोके रखता है।

दीपक : साथी अध्यापकों, उनकी चुनौतियों एवं प्रयासों के सन्दर्भ में आपका क्या कहना है?

सुमन : मैं देखती हूँ कि प्रत्येक अध्यापक अपने उद्देश्य की प्राप्ति में संघर्षरत और दृढ़-संकल्पित दिखाई देता है। तमाम शैक्षिक चुनौतियों के बाद भी हम सब शिक्षकों को भान होना चाहिए कि हम देश की नींव तैयार कर रहे हैं। ऐसे में हमें अपना काम पूरी तैयारी, ईमानदारी, निष्ठा और जज़्बे के साथ करना चाहिए। हम शिक्षकगण उस काम में लगे हुए हैं, जहाँ से एक बेहतर दुनिया के

सपने के सच होने की सम्भावनाएँ सबसे अधिक हैं। एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज के लक्ष्य को शिक्षा के माध्यम से ही हासिल किया जा सकता है। एक सोचने-विचारने वाले नागरिक की सम्भावना भी शिक्षा की ही दुनिया से है जहाँ हम तर्कों और सवालों से जूझते हुए, अपनी मान्यताओं पर सवाल खड़े करते आगे बढ़ते हैं और सारी चीज़ों को परखकर ही कोई राय बनाते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हम शिक्षकों की ज़िम्मेदारी कुछ अधिक है और हमें आगे बढ़कर उसे स्वीकार करने और काम करने की ज़रूरत है।

सुमन विष्ट ने राजनीति विज्ञान और हिन्दी में स्नातकोत्तर और बीएड किया है। साथ ही आपने हिन्दी में पीएचडी की है। वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय हाज्या वाला सांगानेर शहर में कार्यरत हैं। आपको शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए कई मंचों व संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। आपके पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा और सामाजिक मसलों पर लेख छपते रहते हैं। आपके द्वारा पर्यावरण, वृक्षारोपण व स्वच्छता के लिए बालकों के साथ नुक्कड़ नाटक व जनजागृति कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

सम्पर्क : sumanvisth@gmail.com

दीपक कुमार राय अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जयपुर, राजस्थान में 2019 से रिसोर्स पर्सन के रूप में काम कर रहे हैं। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर, और डीफ़िल डिग्री लेने के बाद उच्च शिक्षा में प्राध्यापक के रूप में अध्ययन-अध्यापन से जुड़े रहे। आपने 'दिगंतर' में एसोसिएट फ़ेलो के रूप में शैक्षणिक शोध से जुड़ी गतिविधियों में भागीदारी की है। आपकी इतिहास, साहित्य, विचार और वैचारिकी पर केन्द्रित लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने बिहार प्रगतिशील लेखक संघ की *पत्रिका रोशनाई,* साप्ताहिक समाचार पत्र *गणादेश, प्रतिश्रुति, आवाज़ जन मन की, संयतिया* आदि पत्रिकाओं के सम्पादन सहित *सैद्धान्तिकी* और *मतादर्श* नामक दो शोध पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया है।

सम्पर्क : deepak.rai@azimpremjifoundation.org